

आधुनिक हिंदी साहित्य और समाज सुप्रिता कासुते

छात्रा, केएलई के जी. आई. बागेवाड़ी कला, विज्ञान एवं वाणिज्य
महाविद्यालय, निपानी।

DOI: <https://doi.org/10.5281/zenodo.17264050>

ABSTRACT:

साहित्य में प्रचलित प्रत्येक अवधारणा का अपने समाज के साथ गहरा संबंध होता है। हिंदी साहित्य के विशेष संदर्भ में बात की जाए तो आधुनिक काल से लेकर भक्तिकाल, रीत काल, छायावादी युग, प्रगतिवादी युग एवं प्रयोगवादी युग आदि धाराओं का अपना एक सामाजिक महत्त्व कहा जाता है। अर्थात् यदि देखा जाए तो साहित्य को समाज की प्रतिकृति या प्रतिरूप माना जाना चाहिए। परन्तु आधुनिक साहित्य और समाज के संबंध की बात जब हम लोग करते हैं तो हमारे सामने एक बात मुख्य रूप से उपस्थित होती है कि हम साहित्यकार से जिस सामाजिक यथार्थ के प्रस्तुत करने की आशा से आधुनिक साहित्य की कल्पना करते हैं।

KEYWORDS:

आधुनिक हिंदी साहित्य, समाज परिवर्तन, साहित्य और समाज संबंध,
गद्य का विकास, राष्ट्रीय चेतना.

प्रस्तावना: आधुनिक हिंदी साहित्य तात्कालिक राजनैतिक गतिविधियों से प्रभावित हुआ है। इसको हिंदी साहित्य का सर्वश्रेष्ठ युग माना जा सकता है, जिसमें पद्य के साथ-साथ गद्य, समालोचन, कहानी, नाटक व पत्रकारिता का भी विकास हो गया है। आधुनिक हिंदी साहित्य 19वीं सदी के उत्तरार्ध से शुरू होता है, जब समाज, राजनीति और साहित्य में बड़े बदलाव आए और ब्रजभाषा के स्थान पर खड़ी बोली का चर्चा आज पुरजोर के साथ जोरों पर है। साहित्य वह है जो इस समष्टि से साहित्यकार की चेतना के बाद उत्पन्न होता है। इस कारण आधुनिक साहित्य और समाज का घनिष्ठ संबंध होता है। ऐसे अनेक उदाहरण से यह सिद्ध किया जा सकता है की समाज को बदलने का काम साहित्य ही

करता है। आज के युग में हिंदी साहित्य का स्थान कम होता जा रहा है।

समाज के परिवर्तन में साहित्य सहज रूप में अपनी भूमिका निभाता है। इसी संदर्भ में डॉ. नागेंद्र 'साहित्य का समाजशास्त्र' नामक ग्रंथ में लिखते हैं की- "कला और समाज के परस्पर संबंध कि उपेक्षा नहीं की जा सकती क्योंकि कला स्वयं ही एक सामाजिक घटना है। महान कला मानव जीवन की सर्वभौम सत्य की प्रतिष्ठा करती है, किंतु इस सर्वभौम रूप की सिद्धि विशेष के द्वारा ही है क्योंकि कला का सृष्टि कलाकार या एक विशेष युग एवं समाज, एक विशेष सांस्कृतिक और वर्ग के साथ संबंध होता है। कला का प्राण तत्व है, सामंजस्य का द्रंढ निहित रहता है। जिसके कारण कला की मूल प्रकृति अनिश्चित एवं परिवर्तनशील बन जाती है"। इसी प्रकार नागेंद्र जी ने साहित्य और समाज के संबंधों के बारे में अनेकानेक सिद्धांत स्थापित किया है।

हिंदी साहित्य का काल विभाजन वर्गीकरण:

हिंदी साहित्य ने अपनी शुरुआत लोकभाषा कविता के माध्यम से की और गद्य का विकास बहुत बाद में हुआ। हिंदी का आरम्भिक साहित्य और विश्व में 8वीं शताब्दी की अपभ्रंश भाषा में मिलता है। हिंदी भारत और विश्व में सर्वाधिक बोली जाने वाली भाषाओं में से एक है। उसकी जड़ें प्राचीन भारत की संस्कृति तक जाती हैं। परन्तु मध्ययुगीन भारत के अवधी, मागधी, अर्धमागधी तथा मारवाड़ी जैसी भाषाओं के साहित्य को हिंदी का आरम्भिक साहित्य माना जाता है।

आधुनिक हिंदी साहित्य के कुछ मुख्य विशेषताएँ:

- » राष्ट्रीयता और परिवर्तन: स्वतंत्रता संग्राम और सामाजिक आंदोलन ने साहित्य में राष्ट्रीय चेतना और नए विचारों को जन्म दिया।
- » छपखाने का प्रभाव: छापखाने के अविष्कार से साहित्य के प्रसार में क्रांति आई जिससे पत्र-पत्रिकाएं लोकप्रिय हुईं।
- » गद्य का विकास: पद्य के साथ-साथ गद्य का भी महत्वपूर्ण विकास हुआ और डायरी, आत्मकथा, यात्रा विवरण आदि नई विधाएँ विकसित हुईं।
- » मानवतावाद और विचार-प्रधान: ईश्वर की अपेक्षा मानव को महत्व

दिया गया, और भावना के साथ-साथ विचारों को भी प्रमुखता मिली।

आधुनिक हिंदी साहित्य में कई धाराएँ आईं। छायावाद में कोमल भावनाओं और सौंदर्य का वर्णन हुआ, जबकि प्रगतिवाद में समाज की समस्याओं और अन्याय पर जोर दिया गया है। नई कहानी और नई कविता ने आम आदमी से जुड़ाव है। इसमें बेरोजगारी, भ्रष्टाचार, स्त्री शोषण और बदलते समय की समस्याओं पर लिखा जा रहा है। समकालीन हिंदी साहित्य समाज की बदलती स्थितियों का दर्पण है। आज का साहित्य स्त्री विमर्श, दलित साहित्य, आदिवासी साहित्य और वैश्वीकरण जैसे मुद्दों को सामने लाता है। इस प्रकार आधुनिक हिंदी साहित्य केवल कल्पना तक सीमित नहीं रहा बल्कि समाज की समस्याओं, संघर्षों और आशाओं का सजीव चित्रण करता है। यहाँ पारंपरिक भारतीय ग्राहक, श्रोता अथवा पाठक समाज विशेषण छोड़कर जिसे समाज कहना वर्तमान संदर्भ में पर्याप्त होना चाहिए।

यह आधुनिक समाज भी उतना ही और उसी अर्थ में विशिष्ट अथवा 'अभिजात' समाज था जितना और जिस अर्थ में कलाकार एक विशिष्ट वर्ग का प्राणी था। निसंदेह मानव एक है। किन्तु जब हम विकासशील जीवन तत्व की बात करते हैं तब परिवर्तन के सिद्धांत को भी मान लेते हैं। चेतना स्वयं विकासशील है। संवेदन वह यंत्र है जिसके सहारे जीव-व्यष्टि अपने से इतर सब कुछ से संबंध जोड़ती है। वास्तव में जहां तक आधुनिक साहित्य या किसी भी कला का प्रश्न है, संवेदन से हमारा अभिप्राय निरी इंद्रिय चेतना से बिल्कुल भिन्न कुछ होता है। परिवर्तन का दूसरा कारण है, प्रकृति की नयी परिकल्पना। वास्तव में आज के सामाजिक रोग इसी अंतर्विरोध के परिणाम हैं। यदि आधुनिक मानव व्यक्ति भी आधुनिक यंत्र की भांति नैतिकताविहीन तथा अनैतिक होता तो भी उसकी चेतना में गुत्थियाँ न पड़तीं और यदि समाज नैतिक होता तो भी यह परिस्थिति न आती।

साहित्य और समाज का संबंध अन्योन्याश्रित होता है। व्यक्ति समाज में रहकर ही साहित्यिक प्रवृत्तियों को जन्म देता है। वास्तव में साहित्य समाज का दर्पण है। यह शत प्रतिशत सही है, क्योंकि मनुष्य भावों की तरंग साहित्य में मिलती है। बीते हुए अनुभव एवं वर्तमान से

परिचित, सिर्फ परिचित नहीं, जीवन का दूसरा अंग साहित्य के माध्यम से सामने आता है।

साहित्य और समाज के संबंध पर प्रकाश डालते हुए लिखा है की- “जबकि प्रत्येक देश का साहित्य वहां की जनता की चित्त की गति का संचित प्रतिबिंब होता है, तब यह निश्चित है की जनता की चित्त की गति के परिवर्तन के साथ-साथ साहित्य के स्वरूप में भी परिवर्तन होता जाता है। आदि से अंत तक इन्हीं चित्त की गति की परंपरा को परखते हुए साहित्य परंपराओं के साथ उनका सामंजस्य दिखाना ही साहित्य में भी परिवर्तन होता चलता है। इसी दृष्टिकोण से भी हम कह सकते हैं की साहित्य और समाज का अभिन्न संबंध होता है।

साहित्य सदियों से लोगों को अपनी आवाज देने और उन्हें अपनी राय अधिक प्रभावशाली ढंग से व्यक्त करने में मदद करने के लिए जाना जाता है, जिससे मानवता की नींव मजबूत होती है। साहित्य का महत्व आधुनिक समाज में भी महसूस किया जा सकता है। फिल्म, नाटक, संगीत, पत्रिकाएँ, कॉमिक्स आदि दृश्य रूप में साहित्य ही है।

इसी तरह विक्रम संवत् 1800 के उपरांत भारत में अनेक यूरोपीय जातियां व्यापार के लिए आईं। इनके संपर्क से यहाँ पाश्चात्य सभ्यता का प्रभाव पड़ना प्रारंभ हुआ, विदेशियों ने यहाँ के देशी राजाओं की पारस्परिक फूट से लाभ उठाकर अपने पैर जमाने में सफलता प्राप्त की। जिसके परिणामस्वरूप यहाँ पर ब्रिटिश साम्राज्य की स्थापना हुई। अंग्रेजों ने यहाँ अपने शासन कार्य को सुचारू रूप से चलाने एवं अपने धर्म प्रचार के लिए जनसाधारण की भाषा को अपनाया। इसी कार्य के लिए जनसाधारण की भाषा को अपनाया। इसी कार्य के लिए गद्य ही अधिक उपयुक्त होता है। इसी कारण आधुनिक युग की मुख्य विशेषता गद्य की प्रधानता रही। इसी काल में होने वाले मुद्रण कला के अविष्कार ने भाषा विकास में महान योगदान दिया।

स्वामी दयानंद सरस्वती ने भी आर्य समाज के ग्रंथों की रचना राष्ट्रभाषा हिंदी में की और अंग्रेजी मिशनरियों ने भी अपनी प्रचार पुस्तकें हिंदी गद्य में ही छपवाईं। इसी तरह विभिन्न मतों के प्रचार कार्य से भी आधुनिक हिंदी का समुचित विकास हुआ। आधुनिक हिंदी साहित्य, जिसकी शुरुआत 1850 ई. के आसपास मानी जाती है, भारतेंदु युग से

शुरू होकर छायावाद, प्रगतिवाद, प्रयोगवाद, नई कविता और साठोत्तरी कविता तक फैला हुआ है। इसी काल में राष्ट्रीयता की भावना, औद्योगिकीकरण, शिक्षा का प्रसार और संचार माध्यमों के विकास का गहरा प्रभाव पड़ा, जिससे साहित्य में नए विचार, चेतना और नए साहित्यिक रूपों का जन्म हुआ। भारतेंदु हरिश्चंद्र को आधुनिक हिंदी साहित्य का जनक कहा जाता है।

साहित्य समाज को सांस्कृतिक करने के साथ-साथ जीवन मूल्यों की भी शिक्षा देता है एवं कालखंड की विसंगतियों, विद्रूपताओं एवं विरोधाभासों को रेखांकित कर समाज को संदेश प्रेषित करता है। जिससे समाज में सुधार आता है और सामाजिक विकास को गति मिलती है। यह निर्विवाद है की साहित्य द्वारा समाज में परिवर्तन अवश्य लाया जा सकता है। अपनी साहित्यिक परम्परा को एक आधुनिक संदर्भ देने में या साहित्य की अद्यतन प्रवृत्तियों को अपने साहित्यिक दायरे के चौखटे में रखकर देखने में हम प्रायः एक बात की अपेक्षा कर जाते हैं जो वास्तव में अत्यंत महत्व की है। वह यह कि साहित्यिक कृति के मूल्यांकन के लिए यह जानना एकांत आवश्यक है कि कृतिकार को अपने पाठक या गृहीता समाज के साथ कैसा संबंध रहा। पारंपरिक भारतीय ग्राहक, श्रोता अथवा पाठक समाज विशेषण छोड़कर जिसे समाज कहना वर्तमान संदर्भ में पर्याप्त होना चाहिए।

आधुनिक हिंदी का समाज पर प्रभाव:

- » साहित्य ने स्वतंत्रता संग्राम को शक्ति दी।
- » सामाजिक कुरीतियों के खिलाफ जनता को जागृत किया।
- » स्त्री-शिक्षा, स्त्री-सशक्तिकरण और समानता के विचार फैलाए।
- » आम जनता की भाषा को प्रतिष्ठा दी।

निष्कर्ष: आधुनिक हिंदी साहित्य राजनैतिक गतिविधियों से प्रभावित हुआ है। आधुनिक हिंदी साहित्य और समाज। समाज के परिवर्तन में अपनी भूमिका निभाते हैं। हिंदी साहित्य का काल विभाजन, आधुनिक हिंदी साहित्य के मुख्य विशेषताएँ। साहित्य और समाज का संबंध। आधुनिक साहित्य समाज को संस्कारित करने के साथ-साथ जीवन के मूल्यों की भी शिक्षा देती है। हिंदी समाज के कई कवियों ने

अपने ग्रंथों को राष्ट्रभाषा हिंदी में लिखा है। हिंदी साहित्य आज के युग में भी प्रचलित है। आधुनिक साहित्य की विधाओं का केवल विश्लेषण नहीं है, इनमें मूल्यों का गहरा अन्वेषण है, हिंदी साहित्य की संभावनाओं का मंथन है, और साहित्य को संस्कृति के व्यापक संदर्भ से जोड़ने की कोशिश है। इसके साथ ही आधुनिक हिंदी साहित्य की विविध विधाओं, कविता, उपन्यास, कहानी, एकांकी की रचना प्रक्रिया और ऐतिहासिक पृष्ठभूमि का एक समग्र निरूपण प्रस्तुत किया गया है, जिसमें आधुनिक हिंदी साहित्य को आंकने में निश्चित आधार मिल सके।

संदर्भ ग्रंथ:

1. हिंदी साहित्य एक आधुनिक परिदृश्य: सचिदानंद वात्स्यायन
2. विकिपीडिया
3. समाजशास्त्र नामक ग्रंथ: डॉ. नारेंद्र

Funding:

This study was not funded by any grant.

Conflict of interest:

The Authors have no conflict of interest to declare that they are relevant to the content of this article.

About the License:

© The Authors 2024. The text of this article is open access and licensed under a Creative Commons Attribution 4.0 International License.